६०१/१७०

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (पूर्व कसौटी - २४ जून, २०१२)

(समय : सुबह ९:०० से १२:००) **सत्संग प्रवीण - १**

सूचना : प्रश्न के बाद में दिए गए अंक उसी प्रश्न के उत्तर के पृष्ठ क्रम बताते हैं । **कुल गुण : १००**

विभाग-१ : श्री अक्षरपुरुषोत्तम उपासना - द्वितीय संस्करण, मार्च - २००७

प्र.१ निम्नलिखित किन्हीं दो विषय के संदर्भ में शास्त्र के तीन प्रमाण दीजिए । **[६]**
(संदर्भ शास्त्र का नाम और क्रमांक लिखना अनिवार्य है ।)

१. श्रीजीमहाराज सर्वोपरि - अन्य परमहंसों के अनुसार (४४) २. भगवान कर्ता कैसे हैं ? (६)
३. भगवान को निराकार समझ ने से हानि । (१४) ४. निर्विघ्न भक्ति के लिए ब्रह्मरूप होने की आवश्यकता । (१०७-१०८)

प्र.२ प्रमाण, सिद्धांत अथवा पंक्ति पर से विषय का शीर्षक दीजिए । **[५]**

उदाहरण : ''मारुं धाम छे रे, अक्षर अमृत जेनुं नाम । तेमां हुं रहुं रे, द्विभुज दिव्य सदा साकार ॥''
उत्तर : धाम में और पृथ्वी पर - दोनों जगह सदा साकार ।'

१. 'बोलते-चलते जो भगवान हैं, वही प्रत्यक्ष कहलातें हैं ।' (६८)
२. 'प्रकट ने भजी भजी पार पाम्यां घणां, गीध गणिका कपिवृंद कोटि ।' (७२)
३. 'मारी दृष्टिए जक्त ऊपजे शमे, अनेक रूपे माया थई ।' (८)
४. 'साहब का घर संतनमांही, संत साहब कछु अंतर नाहीं ।' (१००)
५. 'इस प्रत्यक्ष भगवान व प्रत्यक्ष संत की पहचान न हो, तो वह शमी के पेड़ के समान है ।' (८१)

प्र.३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । **[४]**

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहि दिया जाएगा ।

१. भगवान को सर्वकर्ता-हर्ता जानने की आवश्यकता । (९)
(१) ☐ भगवान को कर्ता जानने से खुद कर्ता होता है ।
(२) ☐ जो जीव भगवान को ही सर्वकर्ता और सर्वहर्ता नहीं मानता, उससे अधिक कोई दूसरा पापी नहीं हैं ।
(३) ☐ भगवान के अलावा दूसरें को कर्ताहर्ता मानना भगवान का अतिद्रोह है ।
(४) ☐ भगवान को कर्ताहर्ता समझ ने से काल, कर्म, माया का डर बढ़ जाता है ।

२. भगवान साकार कैसे हैं ? (१८)
(१) ☐ ब्रह्मादि सृष्टि साकार है । (२) ☐ भगवान माया के सामने देख रहे थे ।
(३) ☐ भजन करनेवाला साकार है । (४) ☐ तेज मूर्ति के बिना हो ही नहीं सकता ।

प्र.४ निम्नलिखित किसी एक प्रसंग का वर्णन कर के उसका सिद्धांत लिखें । **[४]**

१. अठारह गुदड़ियों का भार । (१२८) २. बापू रतनजी का स्वानुभाव । (१३१)
३. वे जहाँ हैं, वहीं मैं हूँ और जहाँ मैं हूँ, वहीं वे हैं । (१३०)

प्र.५ किन्हीं दो विषयों के बारे में विवरण कीजिए । (बारह पंक्ति में) **[८]**

१. स्वामी सेवक भाव से उपासना । (१०५) २. भगवान में मनुष्यभाव देखने से हानियाँ । (२८)
३. प्रकट भक्ति की महिमा । (७१) ४. जीवनमुक्ता श्रीजीमहाराज । (५८)

प्र.६ निम्नलिखित किन्हीं दो के बारे में कारण लिखें । (बारह पंक्ति में) **[८]**

१. भगवान और संत को दिव्य समझना आवश्यक और अनिवार्य है । (२५-२८)
२. महापुरुष में दोष की कल्पना नहीं करनी चाहिए । (३०)
३. शास्त्रों में प्रतिपादित शाब्दिक अभिव्यक्ति को एकान्तिक भक्त के सिवा अन्य कोई भी जीव नहीं समझ पाता । (१६)
४. भगवान की मूर्ति का सुख पाने के लिए उपासना ही श्रेष्ठ साधना है । (३)

प्र.७ उपासना में क्या समझना चाहिए ? और क्या नहीं समझना चाहिए ? उसके आधार से निम्नलिखित विधानों की पूर्ति कीजिए । **[७]**

(उपासना में क्या समझना चाहिए ?)

१. सगुण और निर्गुणरूप ..... भी सूक्ष्म है । (१५६) २. पुरुषोत्तम ..... अद्वितीय है । (१५६)
३. ऐसे प्रकट ब्रह्मस्वरूप ..... का अधिकारी बन जाता है । (१५७) ४. मुक्ति अवस्था में ..... सर्वोपरिता हमेशा रहती है । (१५५)

(उपासना में क्या नहीं समझना चाहिए ?)

५. अकेले पुरुषोत्तम ..... नहीं है, ऐसा नहीं समझना चाहिए । (१४८) ६. श्रीजीमहाराज के जूते ..... ऐसा नहीं समझना चाहिए । (१५८)
७. मुक्तों की आत्मा ..... प्राप्त नहीं करती, ऐसा नहीं समझना चाहिए । (१५९)

प्र.८ टिप्पणी लिखिए । गुणातीतानन्द स्वामी अक्षर हैं - परमहंसों के शब्दों में । (१४३-१४४) **[५]**

(पृष्ठ पलटिये)

सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद द्वारा किये गये पूर्व कसौटी के आयोजन में मैंने स्वयं कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित रहकर ''**सत्संग प्रवीण-१**'' परीक्षा दी है । निम्नलिखित बातें सही हैं, जो आपको विदित हो ।

दिनांक महीना साल

परीक्षार्थी का जन्म दिन :- ☐☐ ☐☐ ☐☐☐☐

परीक्षा दिनांक और परीक्षा का समय :

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर :

सूचना : सिर्फ़ उपस्थित परीक्षार्थी भूले बिना इस उपस्थिति स्लीप को काटकर, सभी विगत भरकर केन्द्र व्यवस्थापक को वापस कर दें । सिर्फ़ कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित परीक्षार्थी की उपस्थिति स्लीप इकट्ठा करके सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद को जमा करा दे । (अपूर्ण विवरणवाली उपस्थिति स्लीपें मान्य नहि होंगी ।)

विभाग-२ : सत्संग वाचनमाला भाग - ३ - प्रथम संस्करण, नवम्बर - २००२
और युगविभूति प्रमुखस्वामी महाराज - द्वितीय संस्करण, जून - २००७

प्र.९ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । **[९]**

१. ''आप यहाँ विराजमान हैं, और आपको छोड़कर हम अन्यत्र कहाँ भटकते फिरेंगे ?'' (३३) **अथवा** २. ''यहाँ दही कहाँ से ?'' (६९)
३. ''उनकी कुछ कसूर रह गई होगी, इस कारण अब आपके वहाँ जन्म लेकर आया है।'' (७७) **अथवा**
४. ''तुम लोगों को कोई व्यसन भी है ? अपने जीवन को पवित्र और शुद्ध रखना।'' (२६)
५. ''यह आप की झुग्गी, झुग्गी बनी रही है।'' (५१) **अथवा**
६. ''मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि उसने सिर्फ मेरी भूल के कारण आत्महत्या कर ली ।'' (५६)

प्र.१० निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (नौ पंक्ति में) **[८]**

१. बड़ौदा आयोजित विष्णुयाग में गोपालानन्द स्वामीने आहुति दी । (५) **अथवा**
२. महाराज ने धर्मपुर का राज्य लेने की मना कर दी । (६२)
३. घोड़े को शान्त देखकर सभी के विस्मय की सीमा न रही । (३३) **अथवा**
४. सौराष्ट्र संभाग में विचरण दौरान साथ में जुड़ा हुआ विद्यार्थी गाने लगा, ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव.....'' (२८)

प्र.११ निम्नलिखित विषय पर प्रमाणसर विवरण लिखिए । (बारह पंक्ति में) **[८]**

१. बड़ौदा की सभा में मुक्तानन्द स्वामी शास्त्रचर्चा के लिए कटिबद्ध हुए । (१६) **अथवा** २. क्षमावान रधुवीरजी महाराज (५१)
३. सेवा ही उत्सव (३९) **अथवा** ४. आध्यात्मिक ऊँचाई का मानदण्ड : प्रमुखस्वामी महाराज (२१)

प्र.१२ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए। **[५]**

१. पर्वतभाई श्रीजीमहाराज के पलंग से दूर किस लिए बैठे ? (७२)
२. लालजी भक्त ने गुरुमंत्र किस से लिया और वैष्णवी कंठी किस से धारण की ? (३५)
३. मुकुन्ददास ने आत्महत्या करने का निर्णय किस लिए किया ? (१७)
४. नरेन्द्रप्रसाद स्वामी को स्वामीश्री ने कौन-सी सेवा करने को कहा ? (४१)
५. सेवक संत ने गलती से स्वामीश्री को कुल्ला करने के लिए कैसा जल लाकर दिया ? (५२)

प्र.१३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । **[८]**

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहि दिया जाएगा ।

१. निष्कुलानंद स्वामी के रचे हुए ग्रंथ (४४)
(१) ☐ यमदंड (२) ☐ भक्तचिंतामणि (३) ☐ उद्धवगीता (४) ☐ सारसिद्धि

२. रघुवीरजी महाराज की विशेषता (५४)
(१) ☐ पूरे वड़ताल में एक रघुवीरजी महाराज ने गुणातीतानंद स्वामी को पहचाना ।
(२) ☐ रघुवीरजी महाराज ४० साल तक आचार्यपद पर रहे ।
(३) ☐ रघुकुल में रघुवीरजी महाराज जैसा कोई नहीं है ।
(४) ☐ रघुवीरजी महाराज का त्याग तो महाराज के त्याग के बराबर था ।

३. शास्त्रीजी महाराज के हृदय का रत्न : नारायणस्वरूपदास (१०-११)
(१) ☐ शुद्ध पंचवर्तमान एवं अनन्य गुरुभक्ति । (२) ☐ अक्षरपुरुषोत्तम संस्था के प्रमुख पद पर नियुक्त ।
(३) ☐ दिनांक १०-१-१९३९ : भागवती दीक्षा । (४) ☐ पादरा में जन्म ।

४. प्रमुखस्वामी महाराज ने सहन की हुई कठनाइयाँ (१७)
(१) ☐ १०,००० से ज्यादा गाँवों में विचरण । (२) ☐ १९८५ में बीस दिनों तक ९५ गाँवों में विचरण ।
(३) ☐ १० लाख से अधिक पत्र । (४) ☐ १०२ डिग्री बुखार में १२१ घरों में पधरावनी ।

विभाग - ३ : निबंध

प्र.१४ निम्नलिखित किसी <u>एक</u> विषय पर करीब ६० पंक्ति में निबंध लिखिए । **[१५]**

१. उपनिषद के अमर युवापात्र । (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) - फरवरी - २०१२)
२. मेरे जनको अन्तकाल पे लेने जरूर आना । (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) - सप्टेम्बर - २०११)
३. मेरे अन्तर की वीणा की झनकार : देहातीतपन । (स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) - दिसम्बर - २०११)

❋ ❋ ❋

सूचना : इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक १५ जुलाई, २०१२ के दिन होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें । मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखे हुए उत्तर मान्य नहि होंगे ।

☞ **अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।**

http://www.swaminarayan.org/satsangexams/pastpapers/